भारत सरकार

आयुष मंत्रालय

लोक सभा

तारांकित प्रश्न सं. 105*

09 फरवरी, 2024 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

बिहार में केन्द्रीय सिद्ध औषधि विश्वविद्यालय

*105. श्री दिलेश्वर कामैत:

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार का बिहार में केन्द्रीय सिद्ध औषधि विश्वविद्यालय स्थापित करने का विचार है ताकि सीमावर्ती बाढ़ प्रवण क्षेत्रों विशेषकर सुपौल, मधेपुरा और दरभंगा संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों में लोगों को कैंसर, हृदय रोग और अन्य गंभीर बीमारियों के उपचार की सुविधा मिल सके क्योंकि उन्हें इसके लिए दिल्ली, मुम्बई आदि शहरों में जाना पड़ता है;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं; और

(ग) देश में सिद्ध चिकित्सा पद्धति को लोकप्रिय बनाने और दवाओं के अनुसंधान और विकास के लिए की गई/किए जाने हेतु प्रस्तावित विशेष पहलों का राज्य/संघ राज्यक्षेत्र-वार ब्यौरा क्या है?

उत्तर

आयुष मंत्री (श्री सर्बानंद सोणोवाल)

(क) से (ग): विवरण सदन के पटल पर रखा गया है।

लोक सभा में 09 फरवरी, 2024 को पूछे गए तारांकित प्रश्न संख्या 105* के उत्तर में उल्लिखित विवरण

(क) और (ख): ऐसा कोई प्रस्ताव इस मंत्रालय के विचाराधीन नहीं है।

(ग): देश में अनुसंधान और औषधियों के विकास के साथ-साथ सिद्ध चिकित्सा पद्धति को लोकप्रिय बनाने के लिए मंत्रालय द्वारा निम्नलिखित कदम उठाए गए हैं।

(i) आयुष मंत्रालय ने देश में सिद्ध पद्धति को लोकप्रिय बनाने और बढ़ावा देने और अनुसंधान और सिद्ध चिकित्सा पद्धति के विकास को बढ़ावा देने के लिए केन्द्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद (सीसीआरएस) और राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान (एनआईएस), चेन्नई की स्थापना की है।

(ii) आयुष मंत्रालय सिद्ध चिकित्सा पद्धति सहित आयुष चिकित्सा पद्धतियों के संबंध में जागरूकता पैदा करने के लिए आयुष में सूचना, शिक्षा एवं संचार (आईईसी) के संवर्धन हेतु केन्द्रीय क्षेत्र की योजना को कार्यान्वित करता है। इसका उद्देश्य बिहार राज्य सहित देश भर में आबादी के सभी वर्गों तक पहुंचना है। इस आईईसी योजना के तहत, मंत्रालय सिद्ध चिकित्सा पद्धति और उपचार सहित आयुष के प्रचार के लिए राष्ट्रीय स्तर के मेलों, राज्य स्तरीय मेलों, संगोष्ठियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं आदि जैसे कार्यक्रमों का समर्थन करता है। इस योजना में प्रिंट और समाचार मीडिया के माध्यम से प्रचार का भी प्रावधान है। सिद्ध चिकित्सा पद्धति को वैश्विक पहुंच तक बढ़ावा देने के उद्देश्य से 2018 से हर साल, राष्ट्रीय सिद्ध दिवस के आयोजन के लिए आईईसी योजना के 'महत्वपूर्ण दिवसों को मनाना' घटक के तहत सीसीआरएस और एनआईएस को अनुदान जारी किए जाते हैं।

(iii) आयुष मंत्रालय सिद्ध सहित आयुष पद्धतियों के विकास और संवर्धन के लिए राज्य/संघ राज्य क्षेत्र सरकारों के माध्यम से राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) की केन्द्रीय प्रायोजित योजना को भी कार्यान्वित कर रहा है और एनएएम दिशानिर्देशों के अनुसार उनकी राज्य वार्षिक कार्य योजनाओं (एसएएपी) में प्राप्त प्रस्तावों के अनुसार उन्हें वित्तीय सहायता प्रदान कर रहा है। मिशन अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित के लिए प्रावधान करता है-

1) मौजूदा सिद्ध सहित आयुष औषधालयों और स्वास्थ्य उप-केंद्रों के उन्नयन द्वारा आयुष स्वास्थ्य और कल्याण केंद्रों का संचालन
2) प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (पीएचसी), सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (सीएचसी) और जिला अस्पतालों (डीएच) में सिद्ध सहित आयुष सुविधाओं का सह-स्थापन
3) सिद्ध सहित राजकीय आयुष अस्पतालों, सरकारी औषधालयों और सरकारी/सरकारी सहायता प्राप्त शिक्षण संस्थागत आयुष अस्पतालों को अनिवार्य औषधियों की आपूर्ति
4) मौजूदा एकल सिद्ध सहित सरकारी आयुष अस्पतालों का उन्नयन
5) मौजूदा सिद्ध सहित सरकारी/पंचायत/सरकारी सहायता प्राप्त आयुष औषधालयों का उन्नयन/मौजूदा आयुष औषधालयों के लिए भवन का निर्माण (किराए पर/जीर्ण-शीर्ण आवास)/नए आयुष औषधालय की स्थापना के लिए भवन का निर्माण
6) 10/30/50 बिस्तरों वाले सिद्ध सहित एकीकृत आयुष अस्पतालों की स्थापना
7) आयुष जन स्वास्थ्य कार्यक्रम
8) उन राज्यों में सिद्ध सहित नए आयुष कॉलेजों की स्थापना जहां सरकारी क्षेत्र में आयुष शिक्षण संस्थाओं की उपलब्धता अपर्याप्त है
9) सिद्ध सहित आयुष स्नातक संस्थानों का अवसंरचनात्मक विकास

10) सिद्ध सहित आयुष स्नातकोत्तर संस्थानों का अवसंरचनात्मक विकास/पीजी/फार्मेसी/पैरा-मेडिकल पाठ्यक्रमों को शामिल करना
11) राज्य/संघ राज्य क्षेत्र सरकारें राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) के दिशा-निर्देशों के प्रावधानों के अनुसार अपनी उपयुक्त राज्य वार्षिक कार्य योजनाएं (एसएएपी) प्रस्तुत करके वित्तीय सहायता प्राप्त कर सकती हैं।

(iv) अनुसंधान और दवाओं के विकास के साथ-साथ सिद्ध चिकित्सा पद्धति को लोकप्रिय बनाने और बढ़ावा देने के लिए सीसीआरएस द्वारा निम्नलिखित पहल की जा रही है:-

1) सीसीआरएस सिद्ध चिकित्सा पद्धति में अनुसंधान करने के लिए एक शीर्ष निकाय है और तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, नई दिल्ली, पुडुचेरी और गोवा में सीसीआरएस के अपने 9 परिधीय संस्थानों/इकाइयों के माध्यम से विभिन्न रोगों के लिए स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएं प्रदान करता है।
2) गैर संचारी रोग ओपीडी, जेरियाट्रिक ओपीडी, प्रजनन और बाल स्वास्थ्य देखभाल ओपीडी, वर्मम, थोक्कनम बोन सेटिंग योगम ओपीडी, वर्मम और थोक्कनम के माध्यम से जनता को विशेष उपचार प्रदान किए जा रहे हैं।
3) सीसीआरएस आम जनता के लाभ के लिए सिद्ध चिकित्सा पद्धति का प्रसार करने के लिए सक्रिय रूप से विभिन्न सेमिनारों/कार्यशालाओं/सम्मेलनों का आयोजन कर रहा है।
4) जनता के लाभ के लिए सभी संस्थानों/इकाइयों में विभिन्न रोगों से संबंधित स्वास्थ्य जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं।
5) आरोग्य मेलों/प्रदर्शनियों में सिद्ध चिकित्सा पद्धति के माध्यम से विभिन्न रोग दशाओं और इसके प्रबंधन से संबंधित सूचना, शिक्षा एवं संचार सामग्रियां वितरित की जा रही हैं।
6) सीसीआरएस ने राष्ट्रीय समाचार पत्रों, ऑडियो जिंगल, वीडियो वृत्तचित्र फिल्मों में प्रिंट मीडिया के माध्यम से आम जनता के बीच सिद्ध चिकित्सा को लोकप्रिय बनाने के लिए कई कार्यक्रम शुरू किए हैं और आम आदमी तक पहुंचने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म (यूट्यूब, ट्विटर और फेसबुक) का उपयोग किया है।
7) सीसीआरएस का अनुसंधान कार्यक्रम मुख्य रूप से सिद्ध दवाओं की सुरक्षा और प्रभावकारिता अध्ययन, मौलिक सिद्धांतों के सत्यापन, दवा मानकीकरण और गुणवत्ता नियंत्रण, औषधीय पौधों के सर्वेक्षण और खेती और साहित्यिक अनुसंधान सहित नैदानिक अनुसंधान पर केंद्रित है।
8) सीसीआरएस ने आयुष मंत्रालय के सहयोग से पूर्व-नैदानिक और नैदानिक अध्ययन शुरू किए हैं ताकि प्रतिरक्षा में सुधार और कोविड-19 के प्रबंधन और उपचार में सहायता करने में सिद्ध फॉर्मूलेशन की उपयोगिता और प्रभावशीलता का आकलन किया जा सके और अनुक्रमित पत्रिकाओं में शोध लेख प्रकाशित किए जा सकें।
9) केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद ने 75 आईएमआर परियोजनाएं मंजूर की हैं और इनमें से सभी पहलुओं में 8 आईएमआर परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं। 17 परियोजनाएं पीईएमसी मंजूरी की प्रतीक्षा में हैं और 50 आईएमआर परियोजनाएं प्रगति पर हैं।
10) सीसीआरएस द्वारा 10 पेटेंट, 54 पुस्तकें और 720 वैज्ञानिक शोध लेख प्रकाशित किए गए हैं।
11) सीसीआरएस द्वारा विकसित ऐप्स और पोर्टल्स का उल्लेख निम्नलिखित है:

i. टीएचईआरएएन सॉफ्टवेयर को आयुष-अस्पताल प्रबंधन सूचना प्रणाली में विकसित और उन्नत किया गया था। (एएचएमआईएस)

ii. सिद्ध उदालियाल इन्वेंटरी का सत्यापन -वाईआई फॉर द असेसमेंट ऑफ बॉडी कॉन्स्टिट्यूशन (एबीसी) - यह रोगों के निदान, रोग का परीक्षण और उपचार के तौर-तरीकों को तय करने का मौलिक आधार बनाता है। यह संरचना के आधार पर जीवन शैली में संशोधन/सिफारिश भी प्रदान करेगा।

iii. सिद्दार ऐप - औषध प्रतिकूल प्रतिक्रिया के प्रलेखन के लिए सिद्ध पहल। सिद्दार को सिद्ध दवाओं के आकलित और रिपोर्ट किए गए दुष्प्रभावों का प्रलेखन करने के लिए विकसित किया गया है जो जनता को लाभान्वित करते हैं।

iv. डोरमैन - भ्रामक विज्ञापनों के लिए एंड्रॉइड मोबाइल एप्लिकेशन, झूठा दावा और चमत्कारिक उपाय अधिनियम प्रबंधन मोबाइल एप्लिकेशन।

(v) एनआईएस सिद्ध में स्नातकपूर्व पाठ्यक्रम, स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम और पीएचडी पाठ्यक्रम संचालित करके तथा संबद्ध अस्पताल में रिपोर्ट करने वाले रोगियों को सिद्ध चिकित्सा पद्धति में उपचार प्रदान करके भी सिद्ध चिकित्सा पद्धति को बढ़ावा दे रहा है। संस्थान सिद्ध चिकित्सा पद्धति को बढ़ावा देने के लिए आरोग्य मेला आदि जैसे विभिन्न कार्यक्रमों में भी भाग लेता है। संस्थान सिद्ध चिकित्सा पद्धति के प्रभावी प्रचार-प्रसार के लिए सोशल मीडिया और वर्चुअल मीडिया का भी उपयोग करता है। एनआईएस ने तमिलनाडु से बाहर के लोगों में सिद्ध चिकित्सा पद्धति के बारे में जागरूकता पैदा की है। संस्थान सिद्ध चिकित्सा पद्धति के बारे में अधिक जागरूकता पैदा करने के लिए सिद्ध दिवस समारोह, सीएमई, कार्यशालाएं, सेमिनार और सम्मेलन जैसे कई कार्यक्रम भी आयोजित करता है।

******